रूस की अपनी यात्रा की समाप्ति पर प्रधानमंत्री का वक्तव्य

दिनांक 7 दिसम्बर, 2005
नई दिल्ली

रूस के दौरे का मेरा मुख्य उद्देश्य हमारे दोनों देशों के बीच फिर से एक व्यापक बातचीत को बढ़ावा देना था। हम सभी भारत और रूस के बीच अनेक क्षेत्रों में गहरे और व्यापक संबंधों की पृष्ठभूमि के बारे में जानते हैं। फिर भी, हाल ही के वर्षों में ऐसा प्रतीत हुआ है कि नई संभावनाएं तलाशने अथवा नए उपाय करने की दिशा में कुछ ज्यादा नहीं किया गया है।

मैं चाहता था कि इस दौरे के समय राष्ट्रपति श्री पुतिन के साथ उन क्षेत्रों का पता लगाया जाए जिनमें हमारे दोनों देश परस्पर लाभप्रद सहयोग की संभावनाएं तलाश सकें और इस संबंध को नई गति दे सकें। इस उद्देश्य को इस दृढ़ विश्वास के साथ रेखांकित किया गया था कि यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय माहौल में बदलाव आया है, फिर भी, रूस के साथ भारत के संबंध अनिवार्य रूप से हमारी विदेश नीति के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में देखे जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में यह पहले से भी कहीं अधिक शांति और स्थायित्व का एक कारक है।

राष्ट्रपति श्री पुतिन के साथ हुई मेरी बैठक मास्को की मेरी यात्रा का अति महत्वपूर्ण पहलू था। राष्ट्रपति श्री पुतिन से मुझे जो हार्दिक स्वागत मिला और द्विपक्षीय एजेंडा की समीक्षा के लिए हमने जो समय लगाया, उसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूँ। मैंने राष्ट्रपति श्री पुतिन को बताया कि विगत में रूस से हमने जो सहायता प्राप्त की है वह हमारे लिए शक्ति और विश्वास का स्रोत रहा है और इस विशेष सम्बन्ध को हम हमेशा महत्व देते हैं। हमारे दोनों देशों के बीच कोई विवाद नहीं है। अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हम समान दृष्टिकोण रखते हैं। हमारे दोनों देशों का विश्व के प्रति एक समान नज़रिया है और राष्ट्रपति श्री पुतिन के साथ हुई मेरी चर्चा ने इस विश्वास को और दृढ़ किया है। इसी तरह, हम अपनी सामरिक भागीदारी को नई ऊंचाईयों तक ले जाने और अपनी वर्तमान जरूरतों के अनुरूप बनाने की समान आकांक्षा रखते हैं।

जैसा कि राष्ट्रपति श्री पुतिन के साथ हुई अपनी बैठक के बाद मैंने कहा था, हमने सम्पूर्ण द्विपक्षीय एजेंडे पर बात की और हम जरूरी तथा महत्वपूर्ण मुद्दों के समाधान हेतु समयबद्ध उपाय करने पर सहमत हुए। मुझे खुशी है कि हम चर्चा के दौरान एक ऐसा एजेंडा निर्धारित करने में कामयाब हुए हैं जो व्यावहारिक है और जिसपर आने वाले दिनों में कार्रवाई की जाएगी। इसमें द्विपक्षीय व्यापार तथा निवेश को बढ़ाना, कन्सूलर मुद्दों का समाधान निकालना, उच्च प्रौद्योगिकी वाले क्षेत्रों, सांस्कृतिक, और रक्षा तथा अन्य सभी क्षेत्रों में सहयोग करना जैसे उपाय शामिल हैं।

मॉस्को में मेरे अन्य कार्यक्रमों में सुप्रसिद्ध और ऐतिहासिक मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी का मेरा दौरा शामिल था। मुझे मानद प्रोफेसर की उपाधि से सम्मानित किया गया जिसे मैं स्कॉलरशिप की उस परम्परा को सम्मानित करने के रूप में लेता हूं जिसने भारत और रूस के बीच संबंधों को जोड़ा है। मैं मॉस्को यूनिवर्सिटी में तथा 5 दिसम्बर को भारत-विद्याशास्त्रियों और भारत अध्ययन के छात्रों के साथ हुई अपनी बैठक से उस समय बहुत प्रभावित हुआ जब रूसी छात्रों के पास मुझे समकालिक विषयों सहित भारत के ज्ञान के बारे में विविध और गहरी जानकारी हासिल हुई। यह भारत-रूस सम्बन्धों के लिए एक स्रोत हैं और हम अपने तरीके से इनके प्रयासों को प्रोत्साहन देना चाहेंगे। हमारे दूतावास ने हाल ही में यह वचन दिया है कि वह मॉस्को यूनिवर्सिटी में एशियाई अध्ययन संस्थान के कार्यों में एक छोटा सा योगदान देगा। हम आशा करते हैं कि जहां यह योगदान इस नए कार्य की दिशा में पहला कदम होगा वहीं यह विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के और नए क्षेत्रों में भी तेज़ी से आगे बढ़ेगा।

मैं, रूसी रक्षा मंत्री और ऊर्जा तथा उद्योग मंत्री से भी मिला। ये बैठकें इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हमारे सहयोग की वर्तमान स्थिति का आकलन करने और आगे की दिशा तय करने में उपयोगी रहीं। ये दोनों क्षेत्र हमारी द्विपक्षीय बातचीत के प्रमुख मुद्दे बने रहेंगे और दोनों देश घनिष्ठ सहयोग के प्रति बचनबद्ध है।

मेरे साथ सी.आई.आई. तथा फिक्की का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत के वरिष्ठ व्यावसायियों का एक शिष्टमण्डल भी मॉस्को गया था। मैंने उन्हें मौजूदा नये अवसरों का लाभ उठाते हुए रूस के व्यावसायियों के साथ अधिक से अधिक सम्पर्क व सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। दोनों देशों के व्यावसायिक समुदायों को संबोधित करने के अलावा, मैं भारत और रूस के व्यावसायियों से अलग-अलग भी मिला और उनसे आग्रह किया कि वे व्यापारिक सहयोग के नए स्तर पर पहुंचने के लिए वर्तमान उद्यमशीलता की क्षमता को काम में लाएं। यह भी हमारी साझी प्राथमिकता है क्योंकि राष्ट्रपति श्री पुतिन ने भी उस समय यही बातें कहीं थी जब हमने इस विषय पर चर्चा की थी।

अंत में, मैं कहना चाहूंगा कि हालांकि मेरा यह दौरा एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है फिर भी, भारत-रूस के गहरे संबंधों को देखते हुए यह उस लम्बी यात्रा की अभी केवल एक ही उपलब्धि है जिसपर दोनों देश मिलकर चलेंगे और जो दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण और लाभप्रद होगी।

****